Volume : 6 | Issue : 1 | January - 2017 ISSN - 2250-1991 | IF : 5.215 | IC Value : 79.96

Original Research Paper हिंदी

हिंदी के अज्ञात कवि

डॉ.उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला-वलसाड-396050 (गुजरात)

ABSTRACT

हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने जो तथ्य प्रस्तुत किए हैं उसमें ऐसे भी बहुत सारे कवि हैं, जिनके साहित्यिक कृतियों का इन इतिहासकारों ने उल्लेख मात्र किया है। या तो उनकी रचना नोटिस मात्र है। ऐसे कवियों के कृतित्व की खोज संशोधनकार करते रहे हैं। इनमे से कुछ की रचनाएँ प्राप्त हुई हैं तो बहुत सारे ऐसे कवि भी हैं, जिनकी रचनाएँ प्राप्त हैं किन्तु उनके रचयिता आज भी अज्ञात हैं।

KEYWORDS मिश्रबंधु विनोद, दो सौ वैष्णव की वार्ता, रीतिकाल, राजुल महरोत्रा।

Manuscript-

आचार्य शुक्लजी ने अपने हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम संस्करण के वक्तव्य में लिखा था- **"**सहस्रों हस्तलिखित हिंदी पुस्तकें देश के अनेक भागों में राज-पुस्तकालयों तथा लोगों के घरों में अज्ञात पडी हैं। अतः सरकार की आर्थिक सहायता से उसने सन् **1900** से पुस्तकों की खोज का काम हाथ में लिया और उसने सन् **1911** तक अपनी खोज की आठ रिपोर्टों में सैंकडों अज्ञात कवियों तथा अज्ञात कवियों के अज्ञात ग्रंथों का पता लगाया। सन् **1913** में इस सारी सामग्री का उपयोग करके मिश्रबंधुओं **(**श्रीयुत पं.श्यामबिहारी मिश्र आदि**)** ने अपना बडा भारी कवि वृत्त-संग्रह 'मिश्रबंधु विनोद'**,** जिसमें वर्तमान काल के कवियों और लेखकों का भी समावेश किया गया**,** तीन भागों में प्रकाशित किया।**"**[1]

शुक्लजी की बात दोहराते हुए आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने ' हिंदी साहित्य का आदिकाल' में लिखा था- **"**सन् ईसवी की उन्नीसवीं शताब्दी के बाद से काशी की सुप्रसिद्ध नागरी प्रचारिणी सभा ने पुराने हिंदी ग्रंथों की खोज का कार्य शुरू किया और थोडे ही दिनों में सैंकडों अज्ञात कवियों और ग्रंथों का पता लगा लिया। सभा की खोज की रिपोर्टों के आदार पर मिश्रबंधुओं ने सन् **1913** ई. में 'मिश्रबंधु विनोद' नामक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा**,** जो अपनी समस्त त्रुटियों और खामियों के बावजूद अत्यंत उपादेय है।**"** [2]

हिंदी साहित्य के आदिकाल का 'जयमयंक जस-चंद्रिका' नामक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, इसका उल्लेख सिंघायच दयालदास कृत 'राठौडां री ख्यात' नामक ग्रंथ में मिलता है। ऐसे ही कवि जगनिक के काव्य का पता नहीं है किन्तु उनके आधार पर प्रचलित गीत हिंदी भाषा-भाषी प्रांतों के गाँव-गाँव में प्रचलित हैं।[3]

आचार्य ह.प्र.द्विवेदी ने ग्यारहवीं शतीं के एक, बारहवीं के एक और तेरहवीं शतीं के तीन अज्ञात कवियों का उल्लेख किया है।[4] अपने 'हिंदी साहित्य का आदिकाल' पुस्तक में आगे लिखते हैं- "फिर यदि प्राकृतपैंगलम् के एक कवि के ग्रंथ को वीरगाथाकाल का ग्रंथ समझा जाय तो उसी ग्रंथ में से बब्बर, विद्याधर और अन्य अज्ञात कवियों की रचनाओं को भी उस काल की रचना मानकर विवेच्य क्यों न समझा जाय? प्राचीन गुर्जर-काव्यों में भी अनेक कवियों की रचनाएँ ऐसी हैं, जिन्हें थोड-बहुत हिंदी से सम्बद्ध समझकर इस काल के विषय में विचार किया जा सकता है।"[5] इनका ही मत है कि "लक्ष्मीधर नाम के एक और पंडित ने लगभग चौदहवीं शताब्दी के अंत में 'प्राकृत पैंगल' नामक एक ग्रंथ संग्रह किया। जिसमें प्राकृत और अपभ्रंश के छन्दों की विवेचना है और उदाहरण-रूप में कई ऐसे कवियों की रचनाएँ उद्धृत हैं, जिनका पता और किसी मूल से नहीं लगता। इस ग्रंथ में उद्धृत कविताओं में से कई कवियों के नाम भी मिल जाते हैं पर अधिकांश कविताओं के रचयिता अज्ञात ही हैं।"[6]

"किसी अज्ञात कवि का लिखा हुआ 'कुतुब सतक' नामका एक प्रेम-कथानक काव्य मिला है, जिसमें दिल्ली के सुलतान फिरोजशाह के शाहजादे कुतुबद्दीन और साहिबा का प्रेम-वृत्तांत वर्णित है। यह कथा तुकांत गद्य में है और बीच-बीच में दोहे हैं।"[7]

आचार्य द्विवेदी जो अठारहवीं शती के प्रारंभ में- इसी समय के एक अज्ञात कवि की 'मैनासत ' नामकी रचना प्राप्त हुई है, जिसमें किसी मालिन ने मैना के सतीत्व की परीक्षा ली है।[8]

असल में आचार्य शुक्ल के समय तक रीतिकाल के वे ग्रंथ सामने नहीं आए थे, जो केशव और चिंतामणि त्रिपाठी के बीच में लिखे गए। पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस अंतराल में रचित ग्रंथों की एक लम्बी सूची प्रस्तुत की है-

समय	कवि	रचना
१५९८	कृपाराज	हिततरंगिणी
१६१६	गंग	स्फुट
१६१६	मोहनलाल	श्रृंगारसागर
१६२०	मनोहर	स्फुट
१६२०	गंगाप्रसाद	कोई रीति ग्रंथ (अज्ञात)
१६३७	करनेस	करुणाभरण,श्रुतिभूषण, भूपभूषण
१६५१	हरिराम	छंदरत्नावली
१६५७	बालकृष्ण	रसचंद्रिका (पिंगल)
१६६०	मुबारक	अलक शतक, तिल शतक
१६७६	लीलाधर	नखशिख
१७८८	सुंदर	सुंदरश्रृंगार।[9]

अज्ञात कवियों पर शोध कार्य भी हुआ है। गुजरात में चंद्रकांत मेहता ने 'मीर काव्य परंपरा और गुजरात का अज्ञात कवि मीर मुराद' पर शोध कार्य किया था।[10]

'दो सौ वैष्णव की वार्ता' के कानहरदास, गंगाबाई क्षत्राणी, मन्नालाल, गवैया, ताज, दयाल, धोबी, राजा भीम, नेदा धीमर, दलाल, सगुणदास, रामजीदास आदि कवियों ने काव्य रचना की थी।[11]

रीतिकाल के बहुत सारे अज्ञात कवि मिलते हैं। कृष्णगढ नरेश महाराज सावंतसिंह, जो भक्तवर नागरीदास नाम से प्रसिद्ध थे। इनका जन्म १७५६ ई.स. में हुआ था। गृहक्लेश से विरक्त हो ये वृंदावन चले गए थे। इनकी ७३ रचनाएँ प्राप्त होती हैं।

रामभक्त कवि कृपानिवास (१७८६) जो अयोध्या के थे, इनकी 'भरणा पचीसी', 'समय-प्रबंध', 'माधुरी-प्रकाश', 'जानकी-सुखनाम', 'लगन पचीसी' रचनाएँ मिलती हैं।

गुमान मिश्रा रचित 'कृष्ण चंद्रिका' (१७५०), मनबोधा (१७८०) की 'कृष्ण-जन्म' काव्यकृति, जिसकी भाषा विद्यापति की मैथिली और आधुनिक मैथिली के बीच की है, जिसमें बाल-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया गया है। जिसके बारे में सुजीत मुकर्जी –'This is a narrative poem'[12] कहते हैं, एक महत्वपूर्ण रचना है।

पजनेस रीतिभुक्त रसवादी परंपरा के कवि थे रामनरेश त्रिपाठी ने 'कविता कौमुदी' में इनका एक हस्तलिखित ग्रंथ प्रयाग के राजर्षि टंडन जी के पास होने की सूचना दी थी परंतु वह आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

अंत में रीतिकाल के किन्हीं अज्ञात कवि के कुछ दुर्लभ छन्द राजुल महरोत्रा (विजय नारायण मेहरोत्रा, सेवा निवृत्त बैंक कर्मचारी, लखनऊ) के संग्रह से उपलब्ध हुए हैं।[13] जिसके चार नमूने प्रस्तुत हैं-

1.

न्हातई न्हात तिहारेई स्याम कलिन्दजा स्याम भई बहुतै है ।
धोखेहु धोये हौं यामे कहूँ तो यहै रँग सारिन मैं सरसैहै ।
सांवरे अंग को रँग कहूँ यह मेरे सुअँगन मैं लगि जैहै ।
छैल छबीले छुऔगे जु मोंहि तो गात मैं मेरे गोराई न रैहै ।

भावार्थ- हे श्याम! तुम्हारे स्नान करते करते यह यमुना कालिंदी हो गई है। धोखे में ही सही, यह रँग साडी में सुंदर लगता है। मैं तो श्याम को रंग कहती हूँ। यह रंग मेरे अंगना में भी लग जाये। छैल छबीले कृष्ण अगर मुझे छू देगें तो मेरे शरीर की गोराई न रहेगी। अतः मैं भी श्यामली हो जाउँगी।

2.

मायके के बिरह मयँकमुखी दुखी देखि ,
भेद ताके सासुरे की मालिन बतायो है ।
मोपै ठकुराइन हुकुम करबोई करै ,
खिजमत करिबो हमारे बाँट आयो है ।
भौन में तिहारे बाग ताका हौं ही सेवती हौं ,
तामैं तहखानो सूनो अति ही सुहायो है ।
ताकी कोठरीन की अँध्यारी भारी सुनकर,
दुलही दुलारी के महारी मोद छायो है ।

भावार्थ-पिहर के वियोग से दुःखी चंद्रमुखी को देखकर यह राज उसकी ससुराल की मालिन को बता दिया है। तिस पर ठकुराईन ने चंद्रमुखी की सेवा करने का हुक्म हमें दिया है। भवन के बगीचे में सेवती आदि हैं। किन्तु उसमें जो तहखाना है वह बडा सुहावना है। उसकी कोठरियों में घने अँधेरे की बात सुनकर प्यारी दुल्हन के मन में आनंद छा गया है।

3.

रुचि पाय झवाय दई मेंहदी तेहिको रँग होत मनौ नगु है ।
अब ऐसे मे स्याम बोलावैं भटू कहु जाँउ क्यों पँकु भयो मगु है ।
अधरात अँधेरी न सूझै गली भनि जोय सी दूतिन को सँगु है ।
अब जांउ तो जात धुयो रँगु री रँगु राखौं तो जात सबै रँगु है ।

भावार्थ- पैरों में सुंदर मेहँदी रचायी है, उसका रंग तो मानो मोती है। अब ऐसे में हे सखि, मुझे कृष्ण बुला रहा है, वहाँ मैं कैसे जाउँ? क्योंकि रास्ते में तो कीचड है। मध्य रात्रि के अँदेरे में गली सूझ नहीं रही है। रास्ता दिखा दे वैसी कोई सखि साथ में नहीं है। ऐसे में अगर मैं जाउँगी तो जाति का रंग घुल जायेगा और रंग रखूँगी तो सारी जात रंग जायेगी।

4.

ननँद निनारी सासु माइके सिधारी,
अहै रैन अँधियारी भारी सूझत न करु है ।
पीतम को गौन कविराज न सुहात भौन,
दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झरु है ।
सँग ना सहेली बैस नवल अकेली,
तन पर तलबेली महा लाग्यो मैन सरु है ।
भई अधरात मेरो जियरा डेरात,
जागु जागु रे बटोही इहाँ चोरन को डरु है ।

भावार्थ- ननद (निकाल दी हाँ) उपलब्ध नहीं है और सासु मायके गई है। काली रात है, कुछ दिखाई नहीं देता है। प्रियतम से मिलने जाना है, किन्तु भवन का पता नहीं चलता। क्योंकि दारुण (तीव्र) पवन चलने से अति वृष्टि हो रही है। साथ में न तो सहेली है बस वह तो अकेली है। तन में व्यग्रता है उसमें आग लगी हुई है। आधी रात वह गई है, मेरा हृदय गभरा रहा है। जागो, जागो, हे मुसाफिर! (बटोही), यहाँ पर चोरी का भय है।

निष्कर्ष- इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के अज्ञात कवियों की संख्या कम नहीं है। इतिहासकारों नें जिन अज्ञात कवियो या रचना की और संकेत किया है, आवश्यकता है उसकी खोज-बिन कर उसका सही मूल्यांकन किया जाये। तो शायद हिंदी के आधुनिकतम इतिहास की रचना होगी।

REFERENCES:

1. शुक्ल, रामचंद्र (२०१६), हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.८, नयी दिल्ली, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर
2. शर्मा, रामविलास (संपा.) (२००४), लोकजागरण और आचार्य शुक्ल,प.५८, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
3. द्विवेदी, हजारीप्रसाद (२००८), हिंदी साहित्य का आदिकाल, पृ.३१, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
4. वही.पृ.१८
5. वही.पृ.३०
6. द्विवेदी, मुकुन्द संपा. (२००७), हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली-३, पृ.२६२, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
7. द्विवेदी हजारीप्रसाद (२००७), हिंदी साहित्यःउद्भव और विकास, पृ.१५४, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.
8. वही.पृ.१५४
9. प्रभात, सी.एल. संपा. (२००७),गिरिधर पुरोहित कृत श्रृंगारमंजरी, पृ.१७, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
10. सिंह, विजयपाल (२००७), हिंदी अनुसंधान,पृ.३२, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
11. खान, इशरत(१९९७), भाषा-जुलाई-अगस्त,पृ.८९
12. Mukherjee, Sujit (1998), A Dictionary of Indian Litrature, Volume-1, page no.189,Hyderabad, Orient Longman Ltd.
13. http://kavitakosh.org/kk/ अज्ञात_ कवि_ (रीतिकाल)